AGPE THE ROYAL GONDWANA RESEARCH JOURNAL
OF HISTORY, SCIENCE, ECONOMIC, POLITICAL AND SOCIAL SCIENCE
ISSN (E): 2583-1348 | A Peer reviewed | An Open Access & Indexed
Volume 07 | Issue 07 | July 2026 | www.agpegondwanajournal.co.in | Page No. 11-14

'राम की शक्तिपूजा' में निराला का व्यक्तिगत जीवन संघर्ष

मंजु जसैल[1], डॉ. धनेश कुमार मीणा[2]

[1] शोधार्थी, श्री जेजेटी विश्वविद्यालय, चुड़ैला, झुन्झुनू, राजस्थान

[2] शोध निर्देशक, विभागाध्यक्ष- श्री जेजेटी विश्वविद्यालय, चुड़ैला, झुन्झुनू, राजस्थान

सारांश:- महाप्राण सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित "राम की शक्तिपूजा' आधुनिक हिंदी साहित्य की एक युगांतरकारी और कालजयी लंबी कविता है। यद्यपि इसका बाह्य कथानक पौराणिक है और बांग्ला की 'कृतिवास रामायण' पर आधारित है, किंतु इसके आंतरिक धरातल पर कवि का आत्मसंघर्ष, गहन वैयक्तिक वेदना और जीवन की विसंगतियाँ गुंफित हैं। प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य यह विश्लेषित करना है कि किस प्रकार कविता के नायक 'राम' का संशय, आर्थिक और सामाजिक विषमताओं से उपजी निराशा, और अंततः शक्ति की मौलिक कल्पना द्वारा विजय प्राप्त करना, वास्तव में निराला के अपने जीवन संघर्ष का 'वस्तुनिष्ठ प्रतिरूप' है। यह शोध यह सिद्ध करता है कि राम का द्वंद्व निराला का अपना द्वंद्व है और राम की विजय रूढ़ियों एवं अभावों पर निराला की साहित्यिक विजय का उद्घोष है।

मुख्य शब्द:- राम की शक्तिपूजा, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', व्यक्तिगत जीवन संघर्ष, आत्मसंघर्ष, छायावाद, वस्तुनिष्ठ प्रतिरूप, शक्ति की मौलिक कल्पना, वैयक्तिक वेदना।

प्रस्तावना:-

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का संपूर्ण जीवन और साहित्य सामाजिक और व्यक्तिगत मोर्चे पर एक अनवरत महासंग्राम रहा है। वर्ष 1936 में रचित 'राम की शक्तिपूजा' उस कालखंड की रचना है जब निराला अपनी प्रिय पुत्री सरोज के असामयिक निधन जिस पर उन्होंने 'सरोज स्मृति' जैसी शोक-कविता लिखी और समकालीन प्रकाशकों तथा आलोचकों द्वारा किए जा रहे तीव्र उपेक्षा और विरोध से अत्यंत व्यथित थे।

CORRESPONDING AUTHOR:	RESEARCH ARTICLE
Manju Jasail Research Scholar, Shri. JJT University, Chudaila, Jhunjhunu, Rajasthan Email: manjujasail@gmail.com	

इस कविता में राम तुलसीदास के सर्वशक्तिमान ईश्वर नहीं हैं, बल्कि वे एक साधारण मनुष्य की भांति संशय, पराजय बोध और रुदन से घिरे हुए हैं। आलोचकों का मानना है कि निराला ने राम के इस सगुण मानवीय रूप के पीछे अपने ही जीवन के अंधकार और संघर्ष को छिपाया है।

डॉ. रामविलास शर्मा ने अपनी युगांतरकारी आलोचना कृति 'निराला की साहित्य साधना' में स्पष्ट किया है कि "राम की शक्तिपूजा एक पराजित और अपराजित मन के अस्तित्व की अनुभूति है।" उनके अनुसार, यह कविता निराला के अपने अधिकारों की रक्षा और अभावों को पराजित करने के वैयक्तिक संघर्ष का काव्यात्मक रूपांतरण है।

कविता की शुरुआत "रवि हुआ अस्त" से होती है, जो न केवल युद्ध के उस दिन की समाप्ति का प्रतीक है, बल्कि निराला के जीवन में छाए घोर निराशा के बादलों को भी रेखांकित करता है।

निराला के व्यक्तिगत जीवन संघर्ष के विभिन्न आयाम और कविता में उनके प्रतिरूप:-

आर्थिक विषमता और "अन्याय जिधर है, उधर शक्ति" निराला ने जीवन भर घोर दरिद्रता का सामना किया। साहित्यिक जगत में भी रूढ़िवादी आलोचक और सुविधाभोगी प्रकाशक हावी थे, जो निराला के मुक्त छंद और क्रांतिकारी विचारों का दमन कर रहे थे।

आरती मीणा एवं श्योराज सिंह 'बेचैन' (2021) ने अपने शोध लेख 'निराला का आत्मसंघर्ष और राम की शक्ति पूजा' में प्रतिपादित किया है कि कविता में वर्णित 'अन्याय जिधर है, उधर शक्ति' की अवधारणा सीधे तौर पर निराला के आर्थिक अभावों और तत्कालीन पूंजीवादी प्रकाशकों द्वारा उनके शोषण को दर्शाती है।

कविता में जब राम देखते हैं कि रावण अधर्मी होने के बाद भी महाशक्ति की गोद में बैठा है, तो वे हताश होकर कहते हैं:

"अन्याय जिधर है, उधर शक्ति! कहते छल-छल / हो गए नयन कुछ बूंद प्रपात ही के केवल।"

यह पंक्ति सीधे तौर पर निराला के उस विक्षोभ को प्रकट करती है जहाँ वे देखते हैं कि समाज में अन्यायी और चाटुकार लोग साधन-संपन्न (शक्तिशाली) हैं, जबकि सच्चा साधक उपेक्षित और दरिद्र है।

डॉ. नामवर सिंह के अनुसार, 'राम की शक्तिपूजा' में राम का संशय मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का संशय है, जो अपनी सीमाओं और परिवेश की विषमताओं के बीच सत्य की रक्षा के लिए छटपटा रहा है।

धिक जीवन जो पाता ही आया है विरोध"

निराला का पारिवारिक जीवन अत्यंत त्रासद रहा। बचपन में माता, युवावस्था में पत्नी और अंततः पुत्री सरोज का साया उनके सिर से उठ गया। इसके साथ ही साहित्यिक जीवन में भी उन्हें पग-पग पर विरोध झेलना पड़ा। जब राम अपनी साधना के अंतिम क्षणों में एक नीलकमल गायब पाते हैं, तो वे आत्म-धिक्कार से भर उठते हैं:

"धिक जीवन को जो पाता ही आया है विरोध, / धिक साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध!"

इन पंक्तियों में राम के माध्यम से स्वयं निराला की आत्मा चीत्कार कर उठती है। यह उनके जीवन भर के संघर्षों और समाज से मिले लगातार तिरस्कार की सबसे प्रामाणिक अभिव्यक्ति है।

सीता की मुक्ति और निराला का साहित्यिक संकल्प:-

कविता का मूल केंद्र 'सीता की मुक्ति' है, जो केवल एक स्त्री की मुक्ति नहीं, बल्कि निराला के लिए उनकी काव्य-चेतना, अस्मिता और परतंत्र भारत की मुक्ति का प्रतीक है। राम जब घोर अंधकार में अपनी आँखें बंद करते हैं, तो उन्हें सीता के प्रथम मिलन की स्मृति (जनकपुरी का उपवन) याद आती है, जो उन्हें पुनः लड़ने की ऊर्जा देती है। निराला के जीवन में भी उनकी दिवंगत पत्नी 'मनोहरा देवी' और पुत्री 'सरोज' की स्मृतियाँ ही थीं, जिन्होंने उन्हें अवसाद के गर्त में डूबने से बचाया और साहित्य सृजन के लिए प्रेरित किया।

शक्ति की मौलिक कल्पना: आत्मबल की विजय:-
जब सब रास्ते बंद हो जाते हैं, तब जामवंत राम को परामर्श देते हैं कि वे 'शक्ति की मौलिक कल्पना' करें। राम अपनी आँख (राजीव नयन) को ही देवी के चरणों में अर्पित करने के लिए तत्पर हो जाते हैं:

"यह है उपाय, कह उठे राम ज्यों मंद्रित घन- / 'हैं अमानिशि उगलता गगन घन अंधकार... / अभी यह पुरश्चरण, पूरा करता हूँ देकर मात: एक नयन।'"

यह चरम आत्मोत्सर्ग निराला का अपना संकल्प है। निराला ने भी अपने जीवन की अंतिम सांस तक अपनी साहित्यिक मान्यताओं से समझौता नहीं किया। उन्होंने अपनी आँखों की ज्योति और मानसिक शांति की बाजी लगाकर हिंदी साहित्य को समृद्ध किया।

उपसंहार:-

'राम की शक्तिपूजा' केवल पौराणिक मिथक का पुनराख्यान नहीं है, बल्कि यह महाप्राण निराला के भीतर चल रहे महासंग्राम का सजीव दस्तावेज है। राम के माध्यम से निराला ने अपने जीवन की निराशा, पारिवारिक त्रासदियों और सामाजिक उपेक्षा को वाणी दी है। किंतु कविता का अंत राम की निराशा के साथ नहीं, बल्कि "होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन!" के उद्घोष के साथ होता है। यह अंत इस बात का प्रमाण है कि निराला घोर अंधकार और विषमताओं के बीच भी जीवन की जीजीविषा और सत्य की अंतिम विजय में अटूट विश्वास रखते थे। यह रचना निराला के पराजित जीवन की अपराजित साहित्यिक गाथा है।

संदर्भ सूची:-

1. शर्मा, रामविलास (1980). निराला की साहित्य साधना (भाग 1 और 2). नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
2. सिंह, नामवर (1982). छायावाद. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
3. मीणा, आरती एवं बेचैन, श्योराज सिंह (2821). निराला का आत्मसंघर्ष और राम की शक्ति पूजा. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हिंदी रिसर्च वॉल्यूम 3, इश्यू 3, पृष्ठ493-496
4. सिंह, विकास (2026). निराला के राम: राम की शक्तिपूजा का मानवीय और वैयक्तिक धरातल. यूट्यूब व्याख्यान
5. डॉ. सरिता (2018). 'राम की शक्तिपूजा' का संवेद्यः एक पुनर्विचार- इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ बिज़नेस मैनेजमेंट एंड इकनोमिक रिसर्च।

■ ■ ■